उपसंहार

उपसंहार

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध ''शास्त्रीय संगीत के संवर्धन व संरक्षण में उत्तराखण्ड के कुमाऊँमण्डल का योगदान; एक अध्ययन'' में विषय से संदर्भित विभिन्न तथ्यों की विवेचना की गई है जिसे विषय वर्णन की दृष्टि से छः अध्यायों में विभक्त किया गया है और अन्तिम उपसंहार में समस्त अध्यायों का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है–

प्रथम अध्याय में सर्वप्रथम उत्तराखण्ड के भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को तीन खण्डों में विभाजित किया गया है। प्रथम खण्ड में मैंने भौगोलिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत उत्तराखण्ड के गढ़वाल और कुमाऊँ दोनों मण्डलों के अलग–अलग होने के कारण एक सीमा तक इनके पृथक भौगोलिक इतिहास का उल्लेख किया है जिसमें समय–समय पर विभिन्न कारणों से उत्तराखण्ड के नाम व क्षेत्र अलग–अलग किये जाते रहे हैं जिसका वर्णन मैंने उत्तराखण्ड की क्षेत्रीय संरचना एवं विभाजन के अन्तर्गत किया है उसके पश्चात् गढ़वाल मण्डल व उसके क्षेत्रों में हरिद्वार, देहरादून, चमोली, रूद्रप्रयाग, उत्तरकाशी, पौड़ी गढ़वाल तथा टिहरी गढ़वाल का वर्णन तथा कुमाऊँ मण्डल व उसके क्षेत्रों में अल्मोड़ा, नैनीताल, पिथौरागढ़, बागेश्वर, चम्पावत तथा ऊधम सिंह नगर को बताते हुए उत्तराखण्ड के 13 जिलों का वर्णन किया है। द्वितीय खण्ड में मैंने उत्तराखण्ड की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत सर्वप्रथम प्रागैतिहासिक काल जो कि हजारों लाखों वर्षों तक व्याप्त रहा तथा जिसका इतिहास वेदों, महाकाव्यों, सूत्रों, पुराणों के विवरणों में सुरक्षित रहा है। प्राचीन काल के अन्तर्गत कव्यूरी वंश जो प्रथम ऐतिहासिक राजवंश है का उल्लेख किया है। मध्यकाल के अन्तर्गत गढ़वाल में पंवार वंश तथा कुमाऊँ में चंद वंश का वर्णन किया है तत्पश्चात् आधुनिक काल के अन्तर्गत अंग्रेजी शासन का उल्लेख किया गया है। तृतीय खण्ड में मैंने उत्तराखण्ड की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अन्तर्गत उत्तराखण्ड की संस्कृति से जुड़े लोक जीवन, जाति प्रजाति (थारू,

बोक्सा, भोटिया, राजी), कुमाऊँ के मूल निवासी, लोक संस्कारों का वर्णन किया है साथ ही कुमाऊँ मण्डल में लोक संगीत जो जीवन से जुड़े हर पहलू को स्पष्ट करता है, लोक जीवन में लोक संगीत मनोरंजन के सर्वश्रेष्ठ साधन होने के साथ–साथ उस क्षेत्र के लोक जीवन के उल्लास और जीवन शैली के आनन्द को भी व्यक्त करता है अतः इसके अन्तर्गत कुमाऊँ में प्रचलित लोक शैलियों में ऋतुरैण, हुड़की बोल, मालूशाही, रमौल, भड़ौ, न्यौली, बैर, चौंफुला, बाला खेलई का वर्णन करते हुए कुमाऊँ मण्डल के लोक वाद्यों में तत् वाद्य, सुषिर वाद्य, अवनद्ध वाद्य व घनवाद्य के अन्तर्गत आने वाले वाद्यों का वर्णन किया है तथा कुमाऊँ के लोक नृत्यों में छपेली, झोड़ा, ढुसका, चाँचरी के बारें में भी बताया है।

कुमाऊँ मण्डल में लोक संगीत के साथ शास्त्रीय संगीत के समृद्ध परम्परा पायी गयी। कुमाऊँनी लोक संगीत में समाहित शास्त्रीय संगीत का वृहद् भण्डार कुमाऊँनी लोक धुन शैलियों में पाया गया। जिसके अन्तर्गत इस शोध प्रबन्ध में कुमाऊँनी लोक शैलियों की रागात्मक संरचना का उल्लेख किया है साथ ही संगीत के परिप्रेक्ष्य में भौगोलिक वातावरण का महत्वपूर्ण स्थान है और कुमाऊँ मण्डल का प्राकृतिक वातावरण सांगीतिक क्षेत्र के लिए उपयुक्त है। प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रभाव एक कलाकार की सांगीतिक अभिव्यक्ति पर निसंदेह पड़ता हैं। अतः इसके बारे में उल्लेख किया।

प्रस्तुत अध्याय में निष्कर्षतः आदिदेव, महादेव की क्रीड़ा स्थली होने के कारण यह उत्तराखण्ड क्षेत्र नैसर्गिक सौन्दर्य के साथ अपनी सांस्कृतिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा धार्मिक सम्पदा से सम्पन्न रहा है। यह अनगिनत कंदराओं, झीलों, दर्रों, झरनों, तालाबों व नदियों से परिपूर्ण है। ऋषि–मुनियों की तपस्थली तथा राजा–महाराजाओं द्वारा निर्मित कलात्मक शैलियों से युक्त देवालय आदि की विरासत के साथ–साथ यहाँ के कण–कण में संगीत से जुड़ा लोक–जीवन, लोक–उत्सव, लोक–परम्परा, लोक–कला, लोक–साहित्य,

लोक–शिल्प सभी अपने आप में विशिष्ट महत्त्व रखते हैं। इसके माथे पर चमकता हुआ हिम–शिखर, हरे–भरे, सीढ़ीनुमा खेत, वृक्षों से आच्छादित वन, सर्पीली व घुमावदार सड़कें, विभिन्न प्रकार के पशु–पक्षियों का कलरव–नाद, नाना प्रकार की जल क्रीड़ायें, उफनती नदियों का इठलाता शोर–गुल, कल–कल, छल–छल करते झरनों का मधुर गीत–संगीत लोक जीवन में असीम मधुरता का संचार करते है। इन्हीं से प्रभावित होकर सहस्त्रों ऋषि–मुनि, साधु–सन्त महात्मा साधना व तपस्या के लिए उत्तराखण्ड की पावन–पवित्र धरती पर आयें और मोक्ष प्राप्त किया।

अतः विश्व पटल पर उत्तराखण्ड राज्य अपनी जैविक सम्पदा एवं अमूल्य सांस्कृतिक विरासत के लिए अपनी अलग पहचान बनाये हुए है। प्राचीन सभ्यताओं से देशज राजशाही, गोरखाओं का अत्याचारी शासन और शोषण पर आधारित ब्रिट्रिश साम्राज्यवादी शासन जैसी अवस्थाओं से गुजरने के फलस्वरूप उत्तराखण्ड का जीवन्त समाज सदा से विशिष्ट दर्जा पाता रहा है। उत्तराखण्ड अनेक किंवदंतियों, परम्पराओं, आस्थाओं, धारणाओं, मान्यताओं एवं प्रतीकों का ऐसा हिम–पिण्ड है जो मानव–जीवन को नियन्त्रित करता है उसके जीवन को सुसंस्कृत बनाता है और ऐसी संस्कृति का बीजारोपण करता है जो संस्कारों के रूप में जीवन से लेकर मृत्यु तक निरन्तर कालचक्र में चलती रहती है क्योंकि यही परम्पराएँ, आस्थाएँ, मान्यताएँ प्रतीकों का समन्वय ही अतीत को वर्तमान और वर्तमान को भविष्य से जोड़ता है। आज की स्थिति हमें कल की परिस्थिति का आभास कराती है और मानव जीवन दर्शन भी अपनी आदर्श परम्पराओं के लिए सदैव अग्रणीय रहा है।

द्वितीय अध्याय में मैंने शास्त्रीय सांगीतिक परिप्रेक्ष्य में कुमाऊँ मण्डल का ऐतिहासिक प्रारूप का उल्लेख किया गया है जिसके अन्तर्गत कुमाऊँमण्डल में शास्त्रीय संगीत के इतिहास से जुड़े तथ्यों की विस्तृत विवेचना की गई है, इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा सर्वे तथा साक्षात्कार के आधार पर निकाले गये

निष्कर्षानुसार शास्त्रीय संगीत के संवर्धन व संरक्षण में उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल के इतिहास से संदर्भित शास्त्रीय संगीत की कला व कलाकारों से जुड़ी बातें कुमाऊँ मण्डल के वे ऐतिहासिक पन्ने हैं जो आज भी अपनी इस विशिष्टता को मानस पटल पर अंकित किये हुए हैं जिनको कभी नज़र अन्दाज़ नहीं किया जा सकता क्योंकि सभी का इस देवभूमि की धरा व धरोहर से अतुल्य प्रेम ही इस बात का साक्षी है कि जहाँ अनेक महापुरूषों संगीतज्ञ, दिग्गज, कलाकारों का जन्म हुआ, वहीं अनेक साधकों, गुणीजनों ने इसे अपनी साधनास्थली बनाया और ऐसे शास्त्रीय सांगीतिक वातावरण निर्मित किया कि यह देव–भूमि शास्त्रीय संगीत की एक लम्बी परम्परा का इतिहास बनी।

तृतीय अध्याय में मैंने कुमाऊँ मण्डल में शास्त्रीय संगीत का संवर्धन व संरक्षण की आवश्यकता, उसके महत्त्व, जन मानस पर पड़ने वाले प्रभावों तथा शास्त्रीय संगीत के संवर्धन व संरक्षण में कुमाऊँ मण्डल के श्रोतागणों के विचारों के बारें में वर्णन किया है। जिसके अन्तर्गत यह पाया कि नये–नये आविष्कारों ने जहाँ मानवीय बुद्धि की प्रतिष्ठा को बढ़ाया है, वहीं उसमें आत्मिक विकास की उपेक्षा भी की है। चूँकि मानव सृष्टि का सबसे बुद्धिमान प्राणी है तो हर विषय वस्तु को उचित व्यवस्थित ढंग से उपयोग करना तथा भावी पीढ़ी के लिए संरक्षण सुयोग्य बनाना उसका प्रथम कर्तव्य है इसलिये कोई भी विषय–वस्तु जो मानव से जुड़ी हो, उपयोगी एवं अमूल्य हो उसका संवर्धन व संरक्षण किया जाना स्वतः ही आवश्यक बन जाता है। जिसके अन्तर्गत मानवीय अनुभूतियों के विभिन्न माध्यम काव्य, शिल्प, मूर्ति, वास्तु तथा संगीत आदि सभी कलाओं का अपना विशिष्ट महत्त्व है क्योंकि सम्पूर्ण भारतीय विधाओं का उद्देश्य ही अध्येता में मौलिक सृजन को विकसित करना है परन्तु आज के इस गतिशील युग में युवा पीढ़ी अपनी कई सांस्कृतिक विरासत, अमूल्य धरोहर से अछूती जा रही है। आज मानव जीवन असंतुष्ट है केवल अशांति का वातावरण पाता है। इन परिस्थितियों में आवश्यक है कि आज के इस तकनीकी विकास के युग में अपनी आने वाली युवा पीढ़ी कही इस सांस्कृतिक धरोहर से वंचित न रह जाए इसलिए

इसका संवर्धन व संरक्षण किया जाना चाहिए चूँकि शास्त्रीय संगीत ही ऐसी विधा है जो मानव जीवन के अन्तिम लक्ष्य को प्राप्त करने में समर्थ है। यह मानव जीवन के सर्वांगीण विकास में सहायक है इसकी आवश्यकता ही उसमें निहित महत्त्व को भी प्रकट करती है। यह मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शिक्षा तथा व्यवसायिक इत्यादि जीवन के हर पहलू से व्यक्ति के विकास में ही नहीं वरन् राष्ट्रीय एकता, प्रेम बंधुत्व की भावना के उद्‌भव तथा विकास का भी यह सूत्रधार है। जिसका मानव जीवन पर प्रत्यक्ष प्रभाव रूप से प्रभाव पड़ता है और कुमाऊँ मण्डल में शास्त्रीय संगीत की परम्परा का यहाँ के जन मानस पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ा है, आज की युवा पीढ़ी में शास्त्रीय संगीत को सीखने की उत्तेजना जाग्रित हुई है आज माता–पिता भी अपने बच्चों को शास्त्रीय संगीत की शिक्षा लेने को प्रेरित कर रहे है, चूँकि कुमाऊँ क्षेत्र अधिक विस्तृत नहीं है जिस कारण इसके विकास की गति धीमी है परन्तु आज शास्त्रीय संगीत का प्रयोग प्रचलन में आया है कुमाऊँ मण्डल के कुछ क्षेत्रों में युवा पीढ़ी इस परम्परा से काफी हद तक प्रभावित हुई है, चूँकि किसी भी कला को विकसित करने के लिए एक उचित वातावरण को होना भी अनिवार्य है और कुमाऊँ मण्डल शास्त्रीय संगीत के उचित वातावरण की समृद्ध भूमि रहा है। शोध कार्य के दौरान गुणिजनों, कलाकारों द्वारा शास्त्रीय संगीत की जानकारी से यह ज्ञात हो पाया कि शास्त्रीय संगीत कला, कलाकारों की एक पूंजी है जो आश्रयदाताओं अर्थात् श्रोताओं द्वारा सुरक्षित रही है। जिसके अन्तर्गत कुमाऊँ मण्डल में शास्त्रीय संगीत के श्रोतागण की विशिष्ट भूमिका रही है यह तो स्पष्ट है कि कलाकार के साथ कला का सच्चा श्रोता ही कला के अलौकिक आनन्द का अधिकारी होता है उसी प्रकार कुमाऊँ मण्डल में शास्त्रीय संगीत के श्रोता गणों की भी विशिष्ट भूमिका रही है और साथ ही कुमाऊँ मण्डल के श्रोतागण शास्त्रीय संगीत की परिपक्वता को कुमाऊँनी समाज में एक उच्च कोटि का स्थान दिलाने में समर्थ है।

चतुर्थ अध्याय में मैंने कुमाऊँ मण्डल में शास्त्रीय संगीत संदर्भित वस्तुस्थिति एवं विकासोन्मुख गतिविधियों का वर्णन करते हुए कुमाऊँ मण्डल में आयोजित धार्मिक अनुष्ठान पर्व–उत्सव के अन्तर्गत शास्त्रीय संगीत की विधाओं में कुमाऊँनी बैठकी होली तथा कुमाऊँनी रामलीला का उल्लेख किया है तथा कुमाऊँ मण्डल में आयोजित शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिताएँ एवं सम्मेलनों में जैसे– आचार्य चन्द्रशेखर पन्त जयन्ती, स्व. राजेश्वर शारदा स्मृति संगीत समारोह, पं. विष्णु नारायण भातखण्डे जयन्ती, स्व. दुर्गादास मुखर्जी स्मृति समारोह, डी. आर. पार्वतीकर संगीत समारोह, स्व. वेद प्रकाश गुप्ता स्मृति, स्व. कुमारी निधि संगीत स्मृति समारोह इत्यादि कार्यक्रमों में स्थानीय कलाकर, अतिथि कलाकार व नवोदित कलाकारों के कार्यक्रम रखे जाते हैं जिनकी विस्तृत विवेचना का वर्णन किया गया है जिसके अन्तर्गत शोध कार्य के दौरान कुमाऊँ मण्डल के क्षेत्रों में भ्रमण कर प्राप्त जानकारी के अन्तर्गत शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि शास्त्रीय संगीत की विजय यात्रा का प्रथम सोपान अध्यात्म से आरम्भ हुआ और कालान्तर में इसी सोपान के पुनः दो रूप परिलक्षित हुये, जो लोक व शास्त्र कहलाये, हालांकि पहले लोक बाद में शास्त्र आया। वस्तुतः यह दोनों ही समानान्तर विकसित होते गये तथा एक दूसरे को प्रभावित करते रहे। प्रथम धारा जो वैदिक या साम गायन से प्रेरित थी। वह शास्त्रीय तथा दूसरी जो लौकिक संगीत की अभिव्यक्ति थी वह लोक गीतों के रूप में मुखरित हुई और कुमाऊँ मण्डल में यह दोनों विधा परम्परागत स्वरूप में अपना विशिष्ट महत्त्व बनाती गई जिसमें गीत–संगीत–साहित्य का शास्त्र व लोक पक्ष उभरकर सामने आया। जहाँ कुमाऊँनी लोक विधाओं ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है वहीं शास्त्रीय संगीत ने भी अपना विशिष्ट दर्जा पाया।

कुमाऊँ मण्डल के लोक संगीत में समाहित शास्त्रीय संगीत का वृहद् भण्डार पाया गया। कुमाऊँनी लोक धुनें शास्त्रीय रागों का आधार बनी अर्थात् ऐसा कहना अधिक उचित होगा कि शास्त्रीय संगीत के कतिपय रागों ने लोक धुनों से ही विकसित होकर कालान्तर में शास्त्रीय स्वरूप धारण किया क्योंकि

यदि कुमाऊँनी लोक धुनों, शैलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जाये तो उसमें शास्त्रीय रागों के प्रारूप बनने की पूर्ण क्षमता पायी गयी जिसमें शास्त्रीय रागों में पहाड़ी, पीलू, भूपाली, दुर्गा, सारंग, देश, धानी इत्यादि कई राग–रागिनियों से भरी है अर्थात् यह कहा जा सकता है कि इन्हीं स्वरावलियों के आधार पर शास्त्र में उक्त रागों का निर्माण हुआ। यही नहीं बल्कि ऐसी कई लोक धुनों में छिपी अन्य और भी मनमोहक स्वरावलियाँ है जिनसे नये–नये रागों की उत्पत्ति की जा सकती है।

उसी प्रकार कुमाऊँनी लोक और शास्त्रीय संगीत की अद्‌भुत परम्परा का समन्वित रूप हमें पर्वतीय पर्व, उत्सव के रूप में कुमाऊँनी होली व रामलीला में मिलता है। विभिन्न शास्त्रीय राग–रागनियों तथा लोक संगीत के ताने–बाने से बुनी कुमाऊँनी होली व रामलीला अपने आप में अद्‌भुत है। शास्त्रीय रागों में होलियाँ क्रमशः काफी, भैरवी, पीलू, बहार, बसंत, खमाज, कल्याण, परज, सारंग, झिंझोटी शाहना इत्यादि में गाई जाती हैं और रामलीला क्रमशः बिलावल, पीलू, भैरव, कलिंगड़ा, जयजयवन्ती, बिहाग इत्यादि राग मिश्रण गीतों में प्राप्त होती हैं। यह कुमाऊँनी प्राचीन परम्पराएँ हैं जो लोक संगीत का तराशा हुआ स्वरूप है जिसमें कई शास्त्रीय रागों व तालों की निष्पत्ति इनके गीत–पात्रों से प्राप्त हुई। यह दोनों विधाऐं ही शास्त्रीय संगीत की परम्परा को कुमाऊँ मण्डल में सवंर्धित व संरक्षित करती आई है इन्हें गाने वाले कुछ गायक ही शास्त्रीय संगीत से परिचित होते हैं इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि यह कला इस अंचल के लोगों को विरासत में मिली है अतः यह स्पष्ट है कि कुमाऊँ मण्डल में शास्त्रीय संगीत की यह विधा निरन्तर परिवर्तन के साथ सदियों से चली आई एक विकसित परम्परा है जो अनेक रूपों में ढली व संवरी है।

चूँकि उत्तराखण्ड पर्व–त्यौहार, उत्सवों का स्थल है, अनादिकाल से ही विशेष कारणों को लेकर यहाँ के लोग प्रत्येक वर्ष में होने पर्व–उत्सवों को मनाते आये हैं जिनमें शरदोत्सव–महोत्सव का आयोजन हो, रामलीला का मंचन, होली

की धूम या फिर कोई सांस्कृतिक सांगितिक कार्यक्रम जिनमें शास्त्रीय संगीत अपनी अहम भूमिका निभाता आया है। जो सुख–समृद्धि आध्यात्मिक आस्था एवं कल्याणकारी सोच के प्रतीक है। यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर के रूप में हमारी ठेठ धार्मिक परम्पराओं को जीवित रखने के साधन, प्रकृति प्रेम के माध्यम देवताओं के प्रति आस्थावान, धार्मिक सामाजिक लोक रीतियों पर आधारित राष्ट्रीय एकता के प्रतीक तथा ऋतु परिवर्तन के भी ये सूत्रधार हैं।

कुमाऊँ मण्डल में शास्त्रीय संगीत की इस अमूल्य धरोहर को लेकर प्राप्त जानकारी के द्वारा यह पाया गया कि आज भी कई संगीतज्ञ, विद्वान, कलाप्रेमी जैसे पं. हरिकृष्ण साह (सितार–वादक), पं. विश्वम्भर नाथ साह (शास्त्रीय गायक), पं. नलिन ढोलकिया (शास्त्रीय गायक), पं. चन्द्रशेखर तिवारी (सरोद वादक), आचार्य हरिश पन्त (वॉयलिन वादक), डॉ. पूर्णिमा पाण्डे (नृत्यांगना), डॉ. पूनम जोशी (कत्थक नृत्यांगना, सितार वादिका), डॉ. रेखा साह (शास्त्रीय गायिका), डॉ. विजय कृष्ण (तबला वादक), डॉ. गोपाल कृष्ण साह (सितार वादक), डॉ. महेश चन्द्र पाण्डे (शास्त्रीय गायक), डॉ. पंकज उप्रेती (गायक), डॉ. अजय कुमार गुप्ता (संगीत शिक्षक), डॉ. निर्मला जोशी (संगीत विभागाध्यक्ष), डॉ. लक्ष्मी धस्माना (संगीत प्रवक्ता), कु. संध्या साह (संगीत शिक्षिका), बीना साह (संगीत शिक्षिका), मेहा साह (संगीत शिक्षिका), सन्तोष लाल साह (संगीत शिक्षक), भावना काण्डपाल (संगीत शिक्षिका), डॉ. गोविन्द सिंह बोरा (संगीत विभागाध्यक्ष) इत्यादि के अतिरिक्त सभी अपने सामर्थ्यानुसार इसके संवर्धन व संरक्षण के लिए प्रयास कार्य कर रहे हैं जिनके परिणामस्वरूप कई प्रतियोगिताएं, संध्याएं, बैठकें, गोष्ठियों, सम्मेलनों को बढ़ावा भी मिला है। आज देश के प्रत्येक हिस्सों में सांगीतिक प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं कई संगीत सम्मेलनों, समारोहों में भी प्रतिस्पर्धाओं की भरमार है जिनमें कुमाऊँ मण्डल के अनेक विद्यार्थी प्रतिभाग लेकर अच्छे पारितोषिक होते हैं। कई शिक्षण संस्थाओं में क्षेत्रीय, अन्तरक्षेत्रीय तथा राज्यस्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है उसी प्रकार कई वर्षों से शरदोत्सव में संगीत नाटक अकादमी के सौजन्य से

सांगीतिक प्रतियोगिताओं में शास्त्रीय गायन, वादन व नृत्य की प्रतिस्पर्धा यहाँ आयोजित कराई जाती है यह वास्तव में एक सराहनीय प्रयास कहा जा सकता है जिसमें विद्यार्थियों की कला और निखर कर सामने आती है।

साथ ही यह भी ज्ञात हो पाया कि कई वर्षों से कुमाऊँ मण्डल में प्रतियोगिताओं के साथ–साथ अनेक राष्ट्रीय स्तर के संगीत सम्मेलन, महोत्सवों के आयोजन भी सम्पन्न किये जाते रहे हैं जिनमें आयोजित कार्यक्रमों में मल्हार संध्या, भजन संध्या, गज़ल संध्या, शास्त्रीय संगीत संध्या, लोक संगीत संध्या, सम्भागित प्रतियोगिता, संगीत बैठकें, बाल नृत्य शिखर, कुमाऊँनी होली बैठक, संगीत गोष्ठियाँ, कार्यशालाएं, कॉन्सर्टस, युवा महोत्सव, जयन्ती व स्मृतियों के अवसर पर देश के बड़े–बड़े नामी दिग्गज कलाकारों का इस दिव्यभूमि पर आना–जाना बना रहा है जिनमें कुछ कलाकारों के नाम उल्लेखनीय हैं– उस्ताद नसीर अमीन्नूद्दीन डागर, उस्ताद मुस्ताक हुसैन खाँ, उस्ताद शरफराज हुसैन खाँ, उस्ताद दबीर खाँ, उस्ताद अल्लाउद्दीन खाँ, पंडित चन्द्रशेखर पन्त, पंडित रविशंकर, उस्ताद गोपालदास, पंडित शिवकुमार शर्मा, उस्ताद इलियास खाँ, श्री विश्वमोहन भट्ट, अहमदजान थिरकुवा, नृत्यक शम्भू महाराज, नृत्य सम्राट उदयशंकर, श्रीमती शरणरानी, अली अकबर खाँ, अन्नपूर्णा देवी, प्रभात गांगूली, विनायक राव पटवर्धन, नारायण राव व्यास, प्रो. वी.जी. जोग, पंडित देवव्रत चौधरी तथा प्रतीक चौधरी इत्यादि।

उपर्युक्त देश के नामी कलाकारों के साथ–साथ कुमाऊँ मण्डल के स्थानीय कलाकारों का नाम भी उल्लेखनीय है– पं. चन्द्रशेखर पन्त, प्रो. ध्रुवतारा जोशी, पंडित नारायण दत्त जोशी, पंडित भगवत उप्रेती, स्व. देवीराम आर्या, पंडित भोला दत्त जोशी, आचार्य हरिश चन्द्र भगत, मोहन चन्द्र पन्त, पंडित विश्वम्भर नाथ साह, श्री गोसाईं दत्त दानी, दामोदर जोशी, स्व. विशन राम, रामसिंह, हेमन्त जोशी, पं. चन्द्रशेखर तिवारी, आचार्य हरिश पन्त, डॉ. विजय कृष्ण, श्री मुकेश पन्त, प्रदीप चोपड़ा, स्व. तारा प्रसाद पाण्डे इत्यादि के

अतिरिक्त डॉ. रेखा साह, डॉ. पूनम जोशी, डॉ. गोपाल कृष्ण साह, डॉ. रवि जोशी, डॉ. पूर्णिमा पाण्डे, डॉ. मेहा साह, डॉ. पार्थो राव चौधरी, स्मित तिवारी आदि नवोदित कलाकार हैं।

पंचम अध्याय में मैंने शास्त्रीय संगीत के संवर्धन व संरक्षण में कुमाऊँ मण्डल के छः क्षेत्रों के संगीत कलाकार व शिक्षकों के जीवन में संगीत को प्रतिष्ठित स्थान दिलाने, देश–विदेशों में शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार करने हेतु महान् संगीतज्ञों, विद्वानों, कलाकारों एवं शिक्षकों की भूमिका का वर्णन किया है। जिसके अन्तर्गत शास्त्रीय संगीत के कलाकारों एवं शिक्षक गणों से साक्षात्कार एवं सर्वे के दौरान प्राप्त पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएँ, विवरणिका, स्मारिका आदि जितनी भी ज्ञानवर्धक सामग्री प्राप्त हुई उनके आधारानुसार शोधार्थी इस निष्कर्ष तक पहुँचती है कि भारतवर्ष जैसे विशाल देश में केवल गिनती के कलाकार हों तथा कला या कलाकार की कभी कमी हो ऐसा सम्भव नहीं। यहाँ कई महान् संगीतज्ञ, विद्वान, कलाकारों का जन्म हुआ जिसके अन्तर्गत कुमाऊँ मण्डल में शास्त्रीय संगीत के संवर्धन व संरक्षण के लिए जिन गुणीजन, महान् संगीतज्ञों एवं कलाकारों का वर्णन इस शोध प्रबन्ध में किया गया है उनका योगदान बेहद सराहनीय व प्रशंसनीय है। साथ ही उन संगीत कला प्रेमी, शिक्षक व शिक्षिकाओं की भी विशिष्ट भूमिका रही है जो अपने शिक्षण–प्रशिक्षण द्वारा शास्त्रीय संगीत के संवर्धन व संरक्षण में निरन्तर प्रयास कार्य कर रहे हैं। निष्कर्षतः कुमाऊँ मण्डल की इस पावन–पवित्र धरा में महान् संगीतज्ञों, कलाकारों ने इस अमूल्य धरोहर की दिव्य ज्योति को सदा के लिए प्रकाशमय किया है। इनके जीवन तथ्यों में शास्त्रीय संगीत के प्रति अनुरागी, कठोर परिश्रम तथा जीवन के अन्तिम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए संगीत साधना को देखते हुए यह स्पष्ट है कि इन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन ही संगीत जगत को समर्पित किया।

अन्ततः आज शास्त्रीय संगीत की इस जीवन्त कला को संगतीतज्ञों के रूप में जीवित रखने की उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि प्राचीन ग्रंथों या शास्त्रों को सुरक्षित रखने की क्योंकि संगीत कला अनन्त है जिसका न आदि है और न ही अन्त। यह शिक्षा व शिक्षण के माध्यम से निरन्तर हस्तांतरित होती रही है और होती रहेगी।

षष्ठम् अध्याय में मैंने शास्त्रीय संगीत के संवर्धन व संरक्षण में कुमाऊँ मण्डल की शिक्षण संस्थाओं में सरकारी एवं निजी संस्थाओं में के योगदान का उल्लेख किया है जिसके अन्तर्गत विद्यालय, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय में शास्त्रीय संगीत की स्थिति तथा शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार में विभिन्न सरकारी एवं निजी संस्थाओं की विवेचना का वर्णन किया है। जिसके अन्तर्गत शोधार्थी इस निष्कर्ष तक पहुँचती है कि आज शिक्षा–दीक्षा का जो मापदण्ड है वह हमारे संगीतज्ञों की देन है जो वैज्ञानिक अध्ययन के अन्तर्गत संगीत का शास्त्र बनकर संगीतविदों एवं सरकार के सहयोग से संगीत एक विषय बनकर सभी के समक्ष आया और विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाने लगा। उसी प्रकार कुमाऊँ मण्डल में भी कई सरकारी व निजी शिक्षण संस्थाओं का गठन हुआ और शास्त्रीय संगीत विषय विद्यालय, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय के साथ–साथ संगीत की सरकारी व निजी संस्थाओं में भी अध्ययन–अध्यापन हेतु हस्तान्तरित होता रहा है।

आज की स्थिति परिस्थिति को लेकर कुमाऊँ मण्डल की शिक्षण संस्थाओं में सर्वे के आधार पर शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुँचती है कि कुमाऊँ मण्डल की शिक्षण संस्थाओं में शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किये गये हैं। जिसके अन्तर्गत संस्थाओं में कुमाऊँ मण्डल क्षेत्र के कुछ विद्यालय, महाविद्यालय व विश्वविद्यालय जैसे आर्य कन्या इण्टर कॉलेज (अल्मोड़ा), राजा आनन्द सिंह राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज (अल्मोड़ा), मोहन लाल साह बालिका विद्या मन्दिर इण्टर कॉलेज (नैनीताल), राजकीय बालिका

इण्टर कॉलेज (नैनीताल), श्री सरस्वती देव सिंह राजकीय इण्टर कॉलेज (पिथौरागढ़), गंगोत्री गर्ब्याल राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज (पिथौरागढ़), राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज (चम्पावत), पं. गोविन्द बल्लभ पन्त इण्टर कॉलेज (काशीपुर), राजकीय कन्या इण्टर कॉलेज (काशीपुर), इनके अतिरिक्त कुमाऊँ विश्वविद्यालय, एस. एस. जे. परिसर (अल्मोड़ा), डी. एस. बी. परिसर (नैनीताल), एम. बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय (हल्द्वानी), चन्द्रावती तिवारी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय (काशीपुर) आदि सरकारी संस्थाओं के अतिरिक्त संगीत संदर्भित सरकारी व निजी संस्थाओं में श्री हरिसंकीर्तन संगीत सभा नैनीताल, पं. चनद्रशेखर पन्त संगीत विद्यालय 'शारदा संघ' नैनीताल, उदयशंकर भारतीय संस्कृति कला केन्द्र (अल्मोड़ा), भातखण्डे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय (अल्मोड़ा), आकाशवाणी केन्द्र (अल्मोड़ा), पिघलता हिमालय संगीत शोध समीति (हल्द्वानी), संगीत विद्यालय (अल्मोड़ा), स्वर संगम संगीत संस्थान (हल्द्वानी), सांस्कृतिक कला केन्द्र (हल्द्वानी), सुर और ताल संगीत संस्थान (काशीपुर), विकास शास्त्रीय संगीत विद्यालय (काशीपुर) इन संस्थाओं के माध्यम से शास्त्रीय संगीत अनेक विशेषताओं से समृद्ध भी होता जा रहा है। अपने स्तर पर यह संस्थाएं प्रयासरत कार्य हेतु अपनी विशिष्ट भूमिका निभा कर अपना अमूल्य योगदान भी दे रही हैं। इन संस्थाओं ने अपना स्थान संगीत के विकास में सुनिश्चित किया है जो आगे भी सुनिश्चित रहेगा।

आज इन शिक्षण संस्थाओं में शिक्षण प्रणाली के माध्यम से संवर्धन व संरक्षण की दृष्टि से सराहनीय कार्य किए जा रहे हैं इनमें कोई संदेह नहीं है। शास्त्रीय संगीत के शिक्षण–प्रशिक्षण का जो नितिगत शिक्षण दिया जा रहा है वह भी सराहनीय है परन्तु इनके अलावा भी कई प्रयासों की आवश्यकता नजर आती है पाठ्यक्रम में शिक्षा व्यवस्था का जो स्तर है उसमें भी बदलाव की आवश्यकता है क्योंकि आज शिक्षा का क्षेत्र व्यवसायिक बनता जा रहा है और कही नी कही परिपक्वता की दृष्टि से गिरावट भी आ रही है ऐसी अवस्था में हमारी सांस्कृतिक विरासत की मूल निधि का पतन हो रहा है जिसे रोकना

अत्यन्त आवश्यक है जोकि संगीत से संबंधित लोगों तथा सरकार के सहयोग द्वारा ही सम्भव होगी। इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

चूँकि कला कोई भी हो समर्पण मागती है। अगर आम जन से लेकर विद्यार्थी, शिक्षकगण समस्त आदि सभी अपने कार्यों के प्रति समर्पित होते है तो संगीत की स्थिति मजबूत और भविष्य गामी होगा, सरकारी व निजी संस्थाओं के अलावा, विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षक, प्रशिक्षक आदि सभी का सहयोग शास्त्रीय संगीत के उत्थान के लिये अपेक्षित है। इन सभी के योगदान से शास्त्रीय संगीत कुमाऊँ मण्डल के शिखर पर एक उदित सूर्य की तरह दिव्यमान होगा इसमें कोई संदेह नहीं हैं क्योंकि हजारों वर्ष के परिश्रम के पश्चात् प्राप्त यह परम्परागत संगीत हमारी अमूल्य धरोहर है और इस धरोहर की गरिमा को अक्षुण्ण रखना है जो आने वाली पीढ़ीयों के लिए सही रूप में सुरक्षित रहे इसलिए इसका संवर्धन व संरक्षण किया जाना चाहिए, जिससे शास्त्रीय संगीत का भविष्य उज्जवल हो।

निष्कर्षतः स्पष्ट है कि कुमाऊँ मण्डल में शास्त्रीय संगीत की अमूल्य धरोहर की गरिमा को कई वर्षों से अक्षुण्ण रखा गया है और आज भी इसके संवर्धन व संरक्षण में उत्तराखण्ड के कुमाऊँ मण्डल का विशिष्ट योगदान है।